

नीला जो सुलगता है

अखिलेश

रजा इस बार अपनी वाणी और विचारों में जितने स्वस्थ और प्राञ्जल दिखायी दिये, शारीरिक रूप से उतने ही कमजोर लगे। रजा हर साल आते हैं। अपने साथ होने के लिए। वे अपना ज़्यादातर समय लेखकों, संगीतकारों, विशेषकर युवा चित्रकारों के बीच बिताते हैं। उन्हें पुराने दोस्त पसन्द हैं और वे जीवन के हर छोटे-बड़े मामले में गुणवत्ता और उत्कृष्टता के कायल हैं। अनेक युवा चित्रकारों के साथ रजा की दोस्ती है। वे उनका ध्यान रखते हैं। अपनी दोस्ती को सुश्रुषा और संवाद के रास्ते पकने देते हैं। इस तरह का वाक्य सुनकर वे चिन्तित हो जाते हैं कि “अमुक व्यक्ति अब रेखांकन नहीं करता, अब वह चोरी करने लगा है।” वे उनके स्टूडियो में जाते हैं। उनसे बात करते हैं। वे उन तमाम जगहों पर जाने की योजना बनाते हैं जहाँ उनका बचपन और कैशोर्य बीता है : वे अपने गाँव जाना चाहते हैं। अपने पिता की क़ब्र पर, मण्डला, उज्जैन और इन्दौर जाना चाहते हैं। किन्तु तब भी वे अपना ज़्यादातर समय युवा चित्रकारों के साथ बिताते हैं।

अपने आग्रहों की दृढ़ता के बावजूद रजा बहुत कोमल स्वर में बात करते हैं - ऐसा स्वर जो हमें अपना कायल बना लेता है। वे अपने ही समय में रहते हैं। अपना अवकाश खुद गढ़ते हैं। वे नये विचारों को आत्मसात करने का प्रयत्न करते हैं। युवा कवियों को सुनते हैं। युवा कलाकारों के हजारों काम देखते हैं। उनका वक्त बीतता जाता है। यह सब करते हुए वे अपने ही और भी क़रीब आते जाते हैं। वे प्रबुद्ध हो चुके हैं। वे कैनवास का स्पर्श करते हैं और चमत्कार घटित होने लगता है। एक पारदर्शी चमत्कार।

उनका नीला रंग ही लें। नीला रंग मैं इसलिए चुन रहा हूँ क्योंकि यही वह रंग है जो उनके यहाँ खुलने को तत्पर है ; अनन्त को खोलने के लिए, अपनी गोपन गहराई को खोलने के लिए। लाखों वर्षों से मनुष्य के सिर पर तने हुए आकाश का रंग। पृथ्वी के तीन-चौथाई हिस्से में फैला-हुआ रंग। शिव के कण्ठ में एक पारदर्शी उपस्थिति। प्रशान्त स्मृति का, रहस्यमय प्रकृति का रंग।

महासागर की गहराई को ओट करती एक प्रशामक दृष्टि। यही नीला, हूबहू यही नीला, रजा के चित्र में सुलगता है।

यह रंग, यह नीला रंग, यह राजसी नीला, सुलगता है। यह रंग अपने शान्त स्वभाव के लिए जाना जाता है और यही नितान्त शान्त रंग रजा की चित्रकृति ओशन में पारदर्शी हो उठा है। इसकी प्रशान्ति में हम लपटों को देख सकते हैं, आग को और ऊष्मा को अनुभव कर सकते हैं।

चित्रित जगत में कुछ ‘नीले’ उदाहरण मौजूद हैं, जैसे **गुर्निका** में काले और सौवले के साथ विषण्ण, मन्थर नीला, या यीवस् क्लाइन का गहरा निमग्न नीला, **किंग** के चेहरे पर सूज़ा का नीला, मक़बूल फ़िदा हुसैन के **लास्ट सपर इन ब्लू** का अनायास नीला, और मछलियों और चन्द्रमाओं के अनेकशः नीले अंकन। ये तमाम नीले इस रंग विशेष की अनेक मनःस्थितियों और अभिव्यक्तियों से ताल्लुक रखते हैं। राजसी वैभव के साथ इसका ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रिश्ता, इसकी ठण्डी, शमनकारी अनुशासित उपस्थिति, इसकी निषेधात्मकता, इसका एकाकीपन, इसकी रहस्यात्मक तटस्थता और इसी के साथ-साथ इसके दूसरे जघन्य पक्ष—नीले की व्याप्ति में सब कुछ शामिल है। कैनवास पर नीला :

विलक्षण है

सुन्दर ढंग से विषण्ण है

सुचित्रित है

मृत्यु पर्यन्त अनुभूत है

वहाँ है -

बना रहता है और

रजा आते हैं और इस नीले के उस दूसरे पक्ष को देखते हैं जो निश्चय ही इस रंग का तीसरा आयाम है। ऊष्मा। आग। रजा उसके एकवर्णी एकाकीपन को, उसकी शान्त ठण्डी उदासी को धो देते हैं और इस तरह एक नवजात ज्वलन्त नीले का आविष्कार करते हैं।

मैं एक बचपन को याद करना चाहता हूँ, उस बच्चे के जिसके पिता फोरेस्ट रेन्जर हैं। मण्डला के घने जंगलों के अँधेरे में भटकता यह बच्चा अपने कैशोर्य को जीता है। अँधेरा, जहाँ हर रंग एक विस्मय है। रज़ा की कल्पना पर इस विस्मय का गहरा निशान है। हर रंग उज्ज्वल और चमकीला था, हर रंग अपने में तमाम दूसरे रंगों को समेटे हुए था और यह बच्चा सफ़ेद में पीले को, काले में लाल को, नीले में हरे को, भूरे में नारंगी को अनुभव कर रहा था।

उस अँधेरे में कौंधते इन रंगों ने उनके मानस पर एक गहरा और झिलमिल प्रभाव डाला। जंगल के नीले अँधेरे में नीला रंग आग की तरह उत्पन्न हुआ। इस आग की लपट नीली थी। वह सुलगता हुआ नीला था। बच्चे की स्मृति में यह नीला ही अंकित नहीं हुआ बल्कि तमाम दूसरे रंग भी अपनी झिलमिलाहट के साथ वहाँ मौजूद हैं। रज़ा की कलाकृति में हर रंग एक जगमगाती उपस्थिति हैं : अपनी समूची सघनता में प्राञ्जल। नीला उतना ही ऊष्म है जितना लाल है और लाल में सफ़ेद का शान्त आकर्षण है।

रज़ा अपने जंगल में वापस जाने की आकांक्षा सँजोये प्रतीत होते हैं, रंगों से भरे-जगमगाते, सुलगते रंगों से भरे-जंगल में।

अपनी कृति ओशन में रज़ा ने उन लगभग तमाम नीले रंगों का प्रयोग किया है जो प्रकृति में उपलब्ध हैं। यह भी नीले का एक और आयाम है। आप देखते हैं कि रूढ़ संकेतों को धो डाला गया है। वहाँ एक तरो-ताज़ा नीला है। अपनी ही प्रशान्ति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है। नीले ने अपनी जगह पा ली है, वह अपनी नीलिमा के प्रति सजग हो उठा है। वह अपने घर आ गया है। यह मात्र आत्मबोध नहीं है बल्कि एक रंग का आत्मबोध भी है। रज़ा के रंग सिर्फ़ आकर्षित नहीं करते : हाँ, प्रथमतः वे आकर्षित ही करते हैं, किन्तु फिर वे हमें सम्मोहित होने के लिए भी आमन्त्रित करते हैं, और सम्मोहित होने भर के लिए भी नहीं बल्कि इस सम्मोहन के रास्ते हमें एक असीम अधिभौतिक अवकाश में ले जाने के लिए भी।

यह अवकाश हमें रंग के मर्म तक पहुँचा सकता है - रंगों के उस आध्यात्मिक जगत में जहाँ वे अपनी ही पहचान में जीते हैं, जहाँ वे किसी भी दूसरी इयत्ता में अनूदित नहीं किये जा रहे हैं। वे यहाँ शुद्ध रंग हैं।

रंग का यह मर्म, रंग का घर प्रतीत होता है ; या हम यूँ भी कह सकते हैं : ओशन में नीले रंगों को अपना घर मिल गया है।

यहाँ वे आवेगशील ढंग से आकर्षक, उदास और सघन हैं, और उन्हें देखने के तमाम ढंग यहाँ सम्भव हैं। यह प्राञ्जल अवस्था है। आध्यात्मिक अवस्था।

रज़ा और रंग एक है। रंग वैसा ही आचरण करते हैं जैसा रज़ा सोचते हैं।

यह नीला, ये रंग, रंगों का यह अध्यात्म रज़ा को उनके समकालीनों से अलग करता है। उनके प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप में यह अध्यात्म जिस एकमात्र अन्य कलाकार में है वह है मकबूल फ़िदा हुसैन। उनकी आध्यात्मिकता रेखाओं में है। अध्यात्म के मर्म को दोनों ने ही बहुत साफ़-साफ़ समझा है। एक वहाँ रंगों के सहारे पहुँचता है, दूसरा रेखाओं के।

रंगों को और उनके परस्पर सम्बन्धों को समझने की क्षमता रज़ा में अपने विद्यार्थी जीवन से ही थी। मुझे एक घटना याद आती है जो मेरे पिता मुझे बताया करते थे। मेरे पिता, रामजी वर्मा, हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य चन्द्रेश सक्सेना और रज़ा या तो सहपाठी थे या इनमें से कोई एक कक्षा आगे था। इनमें से प्रथम दो इन्दौर स्कूल के विद्यार्थी थे जो जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से सम्बद्ध था। वार्षिक परीक्षा के लिए विद्यार्थियों को इस महाविद्यालय से बम्बई जाना होता था। मेरे पिता और चन्द्रेश वहाँ 'कम्पोजीशन' के प्रैक्टिकल के लिए गये हुए थे। रज़ा से इनकी मुलाकात इसी दौरान हुई और तीनों में अच्छी पटने लगी। एक दिन दोपहर के भोजन के समय रज़ा चन्द्रेश के स्टूडियो पहुँचे। तीनों के बीच बातचीत हुई चन्द्रेश ने अपने चित्र पर, जिससे वे सन्तुष्ट नहीं थे, रज़ा से टिप्पणी करने का आग्रह किया। कुछ देर तक चित्र को गम्भीरतापूर्वक देखने के बाद रज़ा ने चित्र के ऊपरी हिस्से में नीला रंग लगाने की सलाह दी। अगले दो दिनों में चन्द्रेश ने यही किया और वे यह देखकर चकित हुए कि पूरा का पूरा चित्र बदल चुका था। इम्तिहान के बाकी दिन तीनों ने मजे में बिताये और तीनों अच्छे दोस्त बन गये। मेरे पिता इस किस्से को हमेशा इस वाक्य के साथ पूरा करते थे कि "रज़ा को रंगों की अद्भुत समझ है"।

मैं तभी से रज़ा की कलाकृतियों को देखने की उत्सुकता सँजोये था और जब मैंने पहली बार उन्हें देखा तब चकित था। मैं उन कृतियों में आवेग, नियन्त्रण, रंगों के पारस्परिक सम्बन्धों की समझ, अध्यात्म और नीले रंग का बोध देख सकता था। जितना

ही मैं उन्हें देखता हूँ उतना ही उनसे तदात्म होता जाता हूँ। रज़ा चित्रों को प्राञ्जल बनाते हैं। वे इस कार्तेज़ियन विचार में विश्वास करते हैं : बिल्ली को बिल्ली कहकर पुकारो। वे अपनी कलाकृतियों में, अपने रंगों में उत्तरोत्तर प्राञ्जल, अपनी दृष्टि में उत्तरोत्तर आध्यात्मिक हो रहे हैं।

वे सोचते हैं। जीवन जीते हैं। प्रेम करते हैं। रुचि लेते हैं। रंगों की भाँति आचरण करते हैं।

वे आकर्षित करते हैं। अन्दर से प्रबुद्ध प्रतीत होते हैं। रंगों

को प्रेम करते हैं। सम्बन्धों में रुचि लेते हैं। सौन्दर्य में आस्था रखते हैं। वे दृढ़ भाव से रंगों की भाँति आचरण करते हैं -

तटस्थ प्रशान्त सुलगते हुए नीले की भाँति

ऊष्म सुलगते हुए नीले की भाँति

सुलगते हुए नीले की भाँति

नीले की भाँति.

- मूल अंग्रेज़ी से अनुवाद : मदन सोनी

घोषणा

प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन एक्ट ऑव बुक्स 1956 (1967 में संशोधित) की धारा 5 के अनुसार त्रैमासिक 'पूर्वग्रह' के स्वामित्व और अन्य तथ्यों से सम्बन्धित विवरण :

फार्म - 4

1. प्रकाशन का स्थान : भारत भवन न्यास, शामला हिल्स,
भोपाल - 462 002
2. प्रकाशन की आवर्तता : त्रैमासिक
3. मुद्रक-प्रकाशक का नाम : मदन सोनी
मुख्य अशासनिक अधिकारी, भारत भवन
4. क्या भारतीय है ? : हाँ
पता : भारत भवन न्यास, शामला हिल्स,
भोपाल - 462 002
5. सम्पादक का नाम : मदन सोनी
क्या भारतीय है ? : हाँ
पता : भारत भवन न्यास, शामला हिल्स,
भोपाल-462 002
6. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के मालिक और कुल प्रदत्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं : भारत भवन न्यास, शामला हिल्स,
भोपाल - 462 002

मैं मदन सोनी एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार विवरण सही है।

मदन सोनी

प्रकाशक

मार्च 1998